रात्रि क्लास 26-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों ने अनुभव सुनाया। कोई को अनुभव होता है। अनुभव सुनाने की प्रेक्टीस अच्छी रहती है। पढ़े लिखे भी होते हैं। और यह है सभी का नया अनुभव। भक्ति मार्ग तो आधा कल्प से चला आया है। उनको नया अनुभव नही कह सकते। वेद-शास्त्र महाभारत आद यही चीजें हैं। यह नालेज तो है नहीं। जन्म-जन्मान्तर भक्ति मार्ग के शास्त्र तो पढ़े। यह है बिल्कुल नई बात। भक्तिसे बिल्कुल न्यारी बातें हैं। बच्चों को सभी चित्रों आद का ज्ञान मिल गया है। तुम्हारा युग ही अलग है। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। और यह है ब्राह्मण कुल। आगे तो पता भी नहीं। वह ब्राह्मण भी नहीं जानते जो कुछ वंशावली हैं। कुलवंशावली और मुखवंशावली का भी वर्णन है। परन्तु राईट बातें सुना न सकेंगे। वह सभी हैं इनराईटियस। वहां है सभी राईटियस। राईटियस राज्य राईटियस धर्म भी कहेंगे। सभी राईटस ही चलते हैं। राईटस और अनराईटस आधा आधा है। राईटस सतयुग से शुरु होकर त्रेता अन्त तक चलता है। फिर अनराईटस हो पड़ते। तुम अभी दोनों के कान्ट्रास्ट को जान गये हो। इन बातों को न कलियुगी, मनुष्य न सतयुगी जा सकते हैं। पुरुषोत्तम संगम युगी ही कान्ट्रास्ट कर सकते हैं। यह पढ़ाई है ना। परन्तु आदत पड़ी हुई है तो मुरली2 कहते रहते हो। तुमको मुरली आई है। मुरली पढ़ी है? मुरली नाम कृष्ण का उठा लिया है। अभी इनको क्या कहें। पहले दिन की वाणी आई है। वाणी अक्षर ठीक है। मुरली अक्षर निकल जाना चाहिए। नहीं तो फिर कृष्ण की मुरली याद आवेगा। वाणी इस पोलार से निकलती है। इसलिए आकाशवाणी कहते हैं। आकाश तत्व है ना। आकाश तत्व से वाणी निकलती है। पोलार है ना। (मुरली शब्द मीठा है) आगे चल कर चेंज भी हो सकता है। अभी तो बच्चे समझते हैं जो कुछ सुनते समझते हैं ड्रामा। वह हद का यह बेहद का। बाप को कहा जाता है नालेज फुल। जानी-जाननहार नाम सुना है तो समझते हैं सभी के दिलों को जानने वाला है। अच्छा उससे फायदा क्या? वह सभी बातें सीखते हैं। दो पैसे मिल जाती है। कमाई का रास्ता है। अभी तुम जो बाप से पढ़ते हो यह कमाई इस दुनिया के नहीं हैं। यहराज्योग तुम्हारा है भविष्य के लिए। नये2 सुन कर मुंझ जाते हैं। कैसे हो सकता। पुरुषोत्तम संगम युग का किसको भी पता नहीं है। भक्ति मार्ग में मनाते हैं सभी परन्तु अर्थ रहित। अभी तुमको यर्थात अर्थ समझाया जाता है। अ यर्थात और अयर्थात अभी तुमको पता पड़ता है जब कि यर्थात बातें बताई जाती है। वह है भक्ति। बाप आकर समझाते हैं ज्ञान से दिन भक्ति से रात। फिर वैराग्य किसका? रात का। फिर दिन आता है। भक्ति का वैराग्य। स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं तो कोई बहुत बुधिवान होते हैं। उत्तम मध्यम कनिष्ट होते हैं ना। किसको बहुत थोड़ा समझ में आता किसको कुछ भी नहीं। आवाज़ मीठा लगता है। अक्षर सुनते हैं फिर भूल जाते हैं। रिपीट नहीं कर सकते हैं। फिर कहते हैं पढ़े लिखे नहीं हैं। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ तो सभी भूल जाना है। यह नई पढ़ाई है। आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना है। बाप कहते हैं तूफान आते हैं डरो मत। कहते हैं बाबा स्वपन्न बहुत आते हैं। बाप कहते हैं सभी से जो ती स्वपन्न हमारे पास आते हैं। परन्तु मैं हूं ना। यह सभी माया के तूफान हैं। स्पन्न तो अज्ञान काल में भी बहुत आते हैं। अभी तुम सच्च-मुच देवता बनते हो। जानते हो हम स्वर्ग वासी थे। भारत स्वर्ग था। सिर्फ नाम लम्बादे दिया है। बाप कहते हैं 5000 वर्ष की बात है। भारत स्वर्ग था। भारत की महिमा अपरमअपार है। तुम सुना सकते हो यह भारत5000 वर्ष पहले स्वर्ग था। हैविन था। वह भी समझते हो भारत गाड गाडेस का राज्य था। भारत के लिए सभी की ईज्जत है। जानते हैं हैविन था। अभी गरीब बन है तो मदद देते हैं। वह भी अपनकी कमाई के लिए मदद देते हैं। तुम बच्चे अच्छी रीत जानते हो। फिर से स्थापना कर रहे हो। वही स्वर्ग की। श्रीमत पर तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रीमत परसारी सृष्टि श्रेष्ट बनी है। तुम भी बनते हो। इसलिए स्वर्ग को श्रेष्ठ कहा जाता है। इनकी यह निशानी। तब ही बाबा कहते हैं प्रभात फेरी में भी यह दिखाओ। विश्व में शान्ति थी। एक राज्य एक धर्म था। तुम जो एक्ट करते वह नहीं बात नहीं। अच्छा ओम बच्चों को गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

*::***::*